सन्नी-बन्नी

(बाल गीत)

विमला गुगलानी 'गुग'

तरलोचन पब्लिशर्ज़, चण्डीगढ़

Sanni-Banni

by : Vimla Guglani (Gug)
3200, Sector 40-D
Chandigarh.
Mob. 09888973200
Tel. : 0172-4623200
Email : vimlaguglani@gmail.com

Title designed by

ISBN : 978-81-7914-

Edition : 2018

Price : Rs.

© Author

Published by :
Tarlochan Publishers
3236, Sector 15-D, Chandigarh
Mob: 98146-73236, 98786-03236
E-mail : tpublishers3236@gmail.com

सन्नी-बन्नी, लेखिका : विमला गुगलानी 'गुग'
पेशकश : रघबीर रचना प्रकाशन, चण्डीगढ़
मुद्रक : आर. के. आफ्सैट प्रोसैस, दिल्ली

समर्पण

यह बाल पुस्तक देश के सभी बच्चों को विशेषतौर पर
बालिकाओं को समर्पित है। मैं चाहती हूँ कि सभी बच्चे खुलकर
अपना बचपन जीएं। अच्छी आदतें सीखें, खूब पढ़ें, माँ–बाप,
गुरूजनों और देश का मान बढ़ाते हुए बड़े होकर
अच्छे नागरिक बनें।

इसी कलम से...

- ★ स्मृतियों के आरपार (विभाजन के दु:ख, पाकिस्तान की यादों और सामाजिक कुरीतियों को समेटे पारिवारिक पुस्तक)
- ★ इंद्रधनुषी जीवन कला (जीवन के सुख दु:ख पर आधारित छब्बीस निबंधों का संकलन)
- ★ उत्सव है ज़िंदगी (रोज़मर्रा की ज़िंदगी पर आधारित चौबीस निबंधों का संकलन)
- ★ उड़ान अपनी-अपनी (आचार्यकुल चण्डीगढ़ रजि. द्वारा प्रकाशित चण्डीगढ़ की बयालीस कवयित्रियों की काव्य अनुभूति में भागीदारी)
- ★ पंजाबी के सांझे काव्य संग्रह :
  - ■ सधरां दी फुलकारी
  - ■ महफ़िल शब्दां दी
  - ■ महका दे दरिया
  - ■ नीला अंबर
  - ■ अर्श दीप
  - ■ कौम दा शेर- बाबा बंदा सिंह बहादुर
  - ■ बुज़ुर्ग साडा सरमाया
  - ■ अनमोल बचपन
  - ■ कैनवस
  - ■ बहुरंग
  - ■ कलमां दे सिरनावें
  - ■ शिवालिक काव्य सुगंधियां

हरियाणा साहित्यक अकादमी द्वारा प्रकाशित 'शब्द-बूंद' के नारी ग़ज़लकार विशेषांक में चार कविताएं।

अखबारों, मैगज़ीनों में बहुत सी कविताएं, कहानियां, रचनाएं, रेसिपीज़, सुझाव छप चुके हैं। विभिन्न संस्थाओं द्वारा कई सम्मान हासिल करने का सौभाग्य हासिल हो चुका है। एक किताब छपाई अधीन, हैं।

प्रेरणादायी एवं रोचक बाल-काव्य

विमला गुगलानी जी पंजाबी और हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका हैं। अब तक तीन पुस्तकें साहित्य को अर्पित कर चुकी हैं। एक पुस्तक विभाजन का दर्द समेटे हुए तो दूसरी दोनों निबंध-लेखन पर है। निबंध लेखन में पचास विषयों पर कलम चलाना बहुत बड़ी बात है। बहुत कम लेखकों ने इस विधा पर काम किया है। वजह यह है कि लेखक को विषय की जानकारी होनी चाहिए। दूसरा इसमें कल्पना की कोई गुंजाईश नहीं होती। प्रस्तुत पुस्तक 'सन्नी-बन्नी' जैसा कि नाम से ही विदित है, यह बाल कविताओं का संग्रह है। बाल साहित्य पर प्राचीन काल से ही लेखन चल रहा है। पंचतंत्र, हितोपदेश की कहानियां इसी श्रेणी में आती हैं। बच्चा दादी-नानी की गोद में लोरी सुनकर जल्दी सो जाता है। इससे प्रमाण मिलता है कि काव्य में कितनी ताकत है। बाल मन को समझना पड़ता है फिर उसी ढंग में कविता का लेखन होता है। बच्चों का मन गीली मिट्टी की तरह होता है। जिस पर जो भी लिखा जाए, वह बहुत देर तक प्रभाव छोड़ता है। बाल कविताओं के विषय और भाषा का चुनाव बहुत सोच समझकर करना पड़ता है। कविता लेखन केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि कोई सबक देने वाली भी होनी चाहिए।

अवलोकन करने पर पता चलता है कि गुगलानी जी के विषय बिलकुल बाल मन के अनुकूल हैं। इंद्रधनुष, तितली, सुबह हो गई, नानी का घर, सफाई, सावन, चिड़िया घर, सर्कस बच्चों के प्रिय विषय हैं। इंद्रधनुष कविता में कवियत्री की यह सुंदर पंक्तियां देखिए- 'चंदा- चंदा ज़रा बताना, तूं तो हमारा मामा है, किसने इसको टांगा है, किस रस्सी से बांधा है'।

'सुबह हो गई' कविता में बच्चों को सुबह उठने का संदेश दिया गया है। 'मुंह हाथ धोकर दातुन कर लो, जल्दी से फिर कर लो स्नान, मां-बाप की चरण वंदना, चारों तीर्थ, चारों धाम'।

'सब्जियों की बैठक' में मनोरंजन के साथ-साथ मिलकर रहने की प्रेरणा बहुत ही प्रभावशाली ढंग से मिलती है।

वोट आलू के हक में आए, भिंडी को ये बात न भाए।
प्यार से आलू ने हाथ बढ़ाया, भिंडी ने फिर ताव दिखाया।
आलू ने फिर की अठखेली, जा मर, तू रहना अकेली।
सब सब्जियों में मैं मिल जाऊंगा, खूब स्वाद बढ़ाऊंगा।
भिंडी सदा रही अकेली, कोई ना उसकी सखी सहेली।

उम्मीद है कि इस बाल साहित्य का हृदय से स्वागत होगा। मैं कवियत्री को दिल से मुबारकबाद देता हूं।

प्रेम विज
लेखक, कहानीकार, व्यंग्यकार
संपादक (पूर्व)
जागृति (पंजाब सरकार की पत्रिका)
1284, सैक्टर 37-बी, चंडीगढ़।

मेरी ओर से...

'सन्नी-बन्नी' मेरी पहली बाल-गीत लेखनी है। मुझे याद है, जब हम छोटे थे तो बाहर गलियों में खेलते और बाल कविताएं गाते ही रहते थे जैसे कि 'मछली जल की रानी है' 'चंदा मामा दूर के' इत्यादि। मैंने देखा कि आज के बच्चे खासतौर पर लड़कियां कोई बाहर खेलता ही नहीं। पुराने खेल छुपन छुपाई, शटापू, गीटे, रस्सी कूदना और भी बहुत सारे, सब गुम हो गए हैं। एक तरफ पढ़ाई का बोझ बढ़ गया है तो दूसरी तरफ आधुनिक गैजेट्स टी. वी., मोबाईल, कम्प्यूटर आदि ने सबको अपना गुलाम बना लिया है। माना कि उनके फायदे हैं, लेकिन ये बताने की ज़रूरत नहीं कि नुक्सान कितने हैं। बच्चों का बचपन तो जैसे बचा ही नहीं, इन चीजों ने सब छीन लिया। अपनी भाषा भूलकर हम अंग्रेजी के पीछे ही भाग रहे हैं। हर भाषा अच्छी है और अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का माध्यम है, लेकिन अपनी राष्ट्रीय भाषा का कोई मुकाबला नहीं।

यह बाल-गीत मेरा एक छोटा सा प्रयास है। कुछ गीत मेरे बचपन की यादों के साथ भी जुड़े हैं। माना कि जमाना बदल गया, लेकिन प्रकृति तो आज भी वही है। बच्चे आज भी तितलियों और गिलहरियों के पीछे भागते हैं। बारिश की बूंदें हो या फिर इंद्रधनुष की छटा, सब बच्चों को आज भी भाती हैं। मौका मिले तो बच्चे अब भी कागज़ की नाव चलाते हैं। तो क्यों ना ऐसी कविताओं के द्वारा उन्हें एक मौका दिया जाए। जहां एक ओर हिंदी पढ़ने की आदत विकसित होगी तो दूसरी ओर गाते-गाते ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

परिवार और मित्रगणों के अलावा मैं दिल से धन्यवादी हूँ अठारह किताबों के रचयिता महान कवि, लेखक, व्यंग्यकार श्री प्रेम विज जी की, पंजाब भाषा विभाग की डायरेक्टर श्रीमती गुरशरण कौर जी की, 'सोच दी शक्ति' मैगज़ीन के मुख्य संपादक श्री दलजीत सिंह अरोड़ा जी की और मेरे वार्ड नं. 9 चण्डीगढ़ की अत्यंत सूझवान कौंसलर और पूर्व डिप्टी मेयर मैडम गुरबख्श रावत जी की जिनका समय-समय पर सहयोग और सराहना मिलने से मेरा हौसला बढ़ता रहता है। मेरी इस बाल पुस्तक को सुंदर आकार

देने के लिए मैं दिल से धन्यवादी हूँ स्थापित प्रकाशक सरदार त्रिलोचन सिंह जी तथा उनके स्टाफ़ की, जिन्होनें छपाई के अलावा सुन्दर चित्रों से भी इस पुस्तक को सजाया।

उम्मीद करती हूँ कि पहली तीन पुस्तकों की तरह मेरी इस चौथी पुस्तक को भी बच्चों के साथ-साथ बड़ों का प्यार और आशीर्वाद भी मिलेगा।

विमला गुगलानी
चंडीगढ़।
98889-73200

अनुक्रमिका

❀	प्रार्थना	11
❀	सन्नी-बन्नी	12
❀	इंद्रधनुष	13
❀	'बैको' बिल्ली	14
❀	तितली	15
❀	सुबह हो गई	16
❀	छुट्टियां	17
❀	चिड़िया	18
❀	नानी का घर	19
❀	सफाई	21
❀	सावन	22
❀	चिड़िया घर	23
❀	गिलहरी	24
❀	रोड सेफ्टी	25
❀	कुल्फी वाला	26
❀	सर्कस	27
❀	सब्जियों की बैठक	28
❀	रेलगाड़ी	30
❀	पेड़ लगाएं	31
❀	मेरा भारत	32

प्रार्थना

हे प्रभु हम छोटे बच्चे
भोले भाले और नादान,
गलतियों पर तुम हमारी
देना, बिल्कुल नहीं ध्यान।

छोटे-छोटे हाथ हमारे
नन्ने-नन्ने दो पैर,
मन में चाहत बहुत बड़ी
करें चांद सितारों की सैर।

मात-पिता की सेवा करें
गुरू से मांगें ज्ञान,
देश प्रेम का जज़्बा भर दो
बने देश की शान।

कूड़ा कचरा नहीं फैलाएं
पानी को न व्यर्थ बहाएं,
खेल कूद में आगे आएं
भारत माँ की शान बढ़ाएं।

हे प्रभु हम छोटे बच्चे
हाथ जोड़ कर मांगें दान,
विश्व शांति, मानव की सेवा
दे दो जग को ये वरदान।

सन्नी-बन्नी

सन्नी-बन्नी दो सहेलियां
घर भी आसपास,
सुबह-शाम न मिले अगर
तो दोनों रहे उदास।

भोर भए जब चिड़िया बोले,
दोनों ही जग जाती,
डाल को उनको दाना-पानी
उनकी प्यास बुझाती।

चीं-चीं करती चिड़िया जब फिर
खुशी से पंख फैलाती,
अपने छोटे बच्चों को वो
चोंच से दाना चुगाती।

देख के उनको सन्नी-बन्नी
इठलाती बलखाती,
नाच-नाच के झूम-झूम के
खुशी से ताली बजाती।

नन्ही-नन्ही परियां दोनों
सबका मन बहलाती,
कभी-कभी झगड़ा भी करती
जल्दी मान भी जाती।

इंद्रधनुष

देखो देखो आसमान पर, पड़ा हुआ है झूला,
रंग-बिरंगे रंगों का ज्यों लगा हुआ है मेला।

लाल, गुलाबी, नीले, पीले रंग कहां से आए,
हरे, जामुनी और उनाबी मंद-मंद मुस्काए।

जी करता बस देखे जाए, ज़रा न नज़र हटाएं,
लगता है रंग चुपके-चुपके बगिया से चुराए।

चंदा चंदा ज़रा बताना, तूं तो हमारा मामा है,
किसने इसको टांगा है, किस रस्सी से बांधा है।

पूछेंगे हम इससे मिलकर, रोज़ क्यूं नहीं आता है,
लगता है बारिश से इसका जन्म-जन्म का नाता है।

बरखा रानी जब भी आती, बच्चों को है खूब ये भाती,
खिल उठते सब पौधे पंछी, धरती की ये प्यास बुझाती।

रीना मीना सब आ जाए, कागज़ की हम नाव बनाएं,
लहराती बलखाती देखो आगे पीछे दौड़ी जाए।

धरती तो है रोज़ ही सजती, नभ को भी है सजाना,
बरखा रानी जब भी आना, इंद्रधनुष को साथ ही लाना।

'बैको' बिल्ली

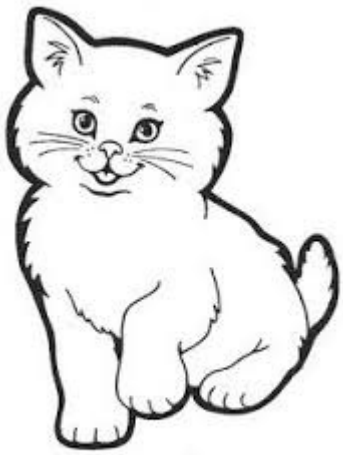

बैको बिल्ली, बैको बिल्ली
मेरी प्यारी बैको बिल्ली,
थोड़ी काली, थोड़ी भूरी
सबसे न्यारी बैको बिल्ली।

चूहों के पीछे न जाती
दूध मलाई चट कर जाती,
सबकी दुलारी बैको बिल्ली
बैको बिल्ली, बैको बिल्ली।

म्याऊँ-म्याऊँ करती रहती,
कभी जागती, कभी है सोती,
मेरे मन को सदा है भाती
बैको बिल्ली, बैको बिल्ली।

कोई उसको डांट लगाए
झट से गोदी में छुप जाए,
प्यार से जब वो पूंछ हिलाए
मानो अपना प्यार जताए।

बड़ी ही प्यारी, बड़ी ही न्यारी
वो तो मेरी बैको बिल्ली,
बैको बिल्ली, बैको बिल्ली
मेरी प्यारी बैको बिल्ली।

तितली

तितली आई, तितली आई, रंग-बिरंगी तितली आई,
कितने सुंदर रंग हैं इसके, आई है फूलों से मिलके।

फड़-फड़, फड़-फड़, पंख हैं फड़के,
धड़-धड़, धड़-धड़ दिल है धड़के।

वो देखो, वो छुटकी सी, कितनी सुंदर प्यारी है,
और वो थोड़ी बड़ी, जैसे खिली हुई फुलवारी है।

छूने को कोई हाथ बढ़ाए, फट से देखो ये उड़ जाए,
कभी यहां तो कभी वहां, कभी इधर तो कभी उधर।

पंखों पर देखो ये कैसी सुंदर मीनाकारी है,
रंग दिए हैं किसने इसको कैसा वो ललारी है।

फूलों में छुप जाती है, कभी हाथ न आती है,
बच्चों को ये भाती है, सबका मन ललचाती है।

दूर से देखो, मत छूना हवा से पंख है हल्के,
झट से ये उड़ जाएगी, निकल जाएगी बच के।

सुबह हो गई

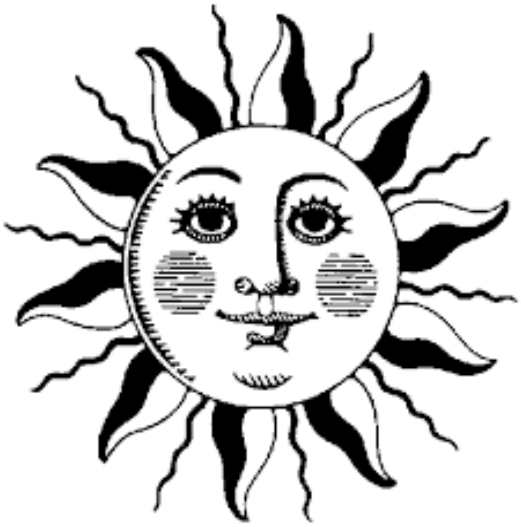

सुबह हो गई, सुबह हो गई,
सब उठ जाओ, सुबह हो गई।

छुप गया चंदा सूरज आया,
तारों का संदेशा लाया।

घास पे नन्ही बूंदें चमके,
पेड़ों में से किरणें झांके।

पक्षी गीत सुनाते हैं,
मीठे सुर में गाते हैं।

ठंडी-ठंडी पवन चले,
सुंदर-सुंदर फूल खिले।

सुबह जो जल्दी उठता है,
उसे न कोई चिंता है।

मुंह हाथ धोकर दातुन कर लो,
जल्दी से फिर कर लो स्नान।

मां-बाप की चरण वंदना,
चारों तीर्थ, चारों धाम।

नाश्ता करके टिफिन लिए,
अब हम देखो स्कूल चले।

छुट्टियां

छुट्टियां हैं जी छुट्टियां हैं, गरमी की जी छुट्टियां हैं,
स्कूल नहीं अब जाना है, घर में मौज मनाना है।

कभी देर तलक सोएंगें, तो कभी सैर को जाएंगें,
थोड़ा टी.वी. देखेंगे, थोड़ी सी चैट लगाएंगे।

गुल्ली डंडा, छुपन छुपाई, जी भर कंचे खेलेंगे,
रीना, मीना, राधा, श्यामा, सबको साथ में ले लेंगे।

सन्नी बन्नी आई है, ज़ारा को भी लाई हैं,
रोज़ी को भी खबर करो, फोन लगाओ नीरा को।

शहर में मेला लगा हुआ है, तरह-तरह के झूले हैं,
खाना पीना वहीं पे होगा, अपना मन तो डोले है।

सबको वहीं पर आना है, मिलकर प्लान बनाना है,
होम वर्क भी करना है, डांस क्लास लगाना है।

घर का थोड़ा काम करेंगे, छोटू को भी पढ़ाना है,
मम्मी से बतियाना है, किचन में हाथ बटाना है।

कुछ दिन गांव भी जाएंगे, दादी से लाड लड़ाऐंगे,
चुल्हे की रोटी खाएंगे, खेतों में जश्न मनाएंगे।

बढ़िया सारा काम करेंगे, समय नहीं गँवाऐगें,
अच्छे से फ्रेश होकर, हम फिर से स्कूल को जाएंगे।

चिड़िया

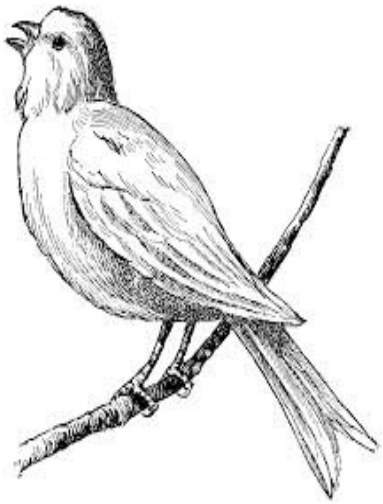

मां देखो वो चिड़िया बैठी,
आंगन में वो डोल रही।

फुदक फुदक कर, झूम झूम कर,
अपने पर वो खोल रही।

कभी वो चुनती दाना तुनका,
मीठी बोली बोल रही।

वो देखो, दो बच्चे उसके,
मुंह खोले वो बैठे हैं।

डाल के दाना उनके मुंह में,
और भी खाना ढूंढ रही।

उछल उछल कर ठुमक ठुमक कर,
मिट्टी में वो लोट रही।

कितना ऊंचा उड़ सकती है,
अपने पर वो तोल रही।

मां देखो वो चिड़िया बैठी,
आंगन में वो डोल रही।

फुदक फुदक कर, झूम झूम कर,
अपने पर वो खोल रही।

नानी का घर

नानी माँ, नानी माँ,
मेरी प्यारी नानी माँ।

सुंदर-सुंदर प्यारी प्यारी,
सबसे न्यारी नानी माँ।

तू तो मेरी माँ की मैया,
जैसे हो बरगद की छैंया।

नानी मेरी बड़ी सयानी,
रोज़ सुनाए चार कहानी।

मीठे-मीठे भजन वो गाती,
पापड़, बड़ी, आचार बनाती।

नानी मुझको बहुत ही भाती,
हलवा पूरी रोज़ खिलाती।

नाना भी तो अच्छे हैं,
दिल के बहुत ही सच्चे हैं।

बाजार ले जाते हैं,
गोलगप्पे खिलाते हैं।

नानी के घर मामी मौसी,
उनसे मेरी पक्की दोस्ती।

मामा जलेबी लाते हैं,
सब मिल घूमने जाते हैं।

जब भी छुट्टियां आती हैं,
नानी हमें बुलाती है।

बड़े मज़े से सब जाएं,
दूध मलाई हम खाएं।

सफाई

यहां वहां न फेकों कूड़ा,
ये तो गंदी आदत है।

भिन्न-भिन्न करती आएंगी मक्खियां
बीमारी को दावत है।

बिस्कुट, टाफी, चिप्स का रेपर,
या फिर हो फलों का कचरा।

कूड़ेदान में डालो सब कुछ,
किसी बात का रहे न खतरा।

यहां वहां ग़र खड़ा हो पानी,
मच्छर मियां करे मनमानी।

घूं घूं करते आएंगें,
खून से प्यास बुझाएंगे।

पोलीथीन को दूर भगाए,
कपड़े की हम थैली लाए।

प्लास्टिक को करे बाए-बाए,
घर में स्टील के बर्तन आए।

सावन

सावन आया, मच गया शोर,
देखो घटा छाई घनघोर।

रिमझिम रिमझिम बूंदे बरसे,
आमों को अब मन है तरसे।

काले काले बादल छाए,
बिजली चमके, मन डर जाए।

कोयल मीठे गीत सुनाए,
मोर खुशी से पंख फैलाए।

बढ़िया खुशबू आ रही,
मम्मी पूड़े बना रही।

रानी तुम कागज़ ले आओ,
मैं सन्नी को बुलाती हूं

रंग-बिरंगी नीली पीली,
सुंदर नाव बनाएंगे।

छप छप बहते पानी में,
मजे से इसे चलाएंगे।

चिड़िया घर

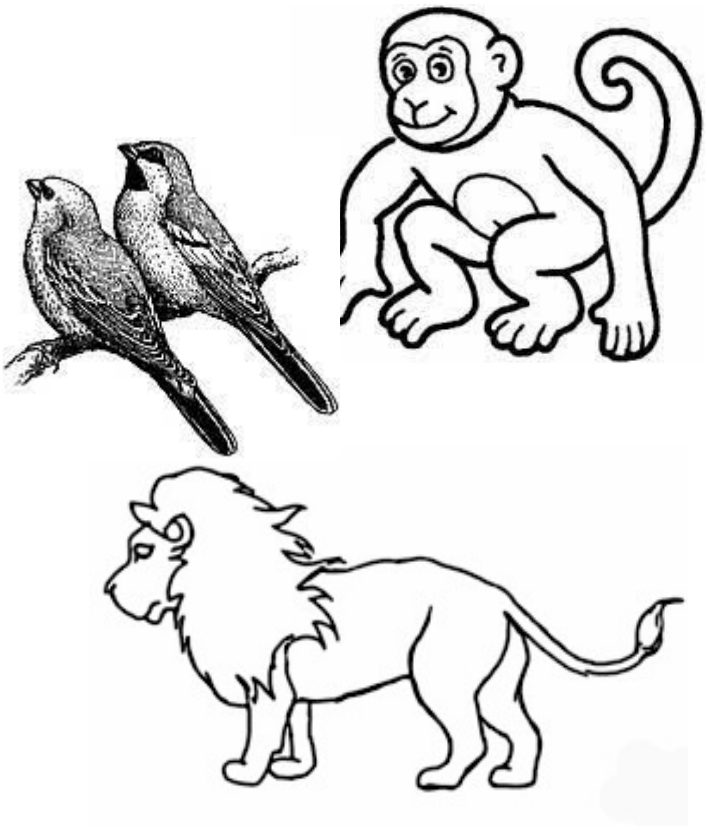

चिड़िया घर की सैर की हमने
बड़ा मजा था आया,
मम्मी-पापा, भैया के संग
पूरा दिन था बिताया।
नटखट बंदर घूर रहे थे,
डालियों पर वो झूम रहे थे
छीन के टोपी रोशन की,
खुशी से पहने घूम रहे थे।
बंद पिंजरे में शेर को देखा,
चीता भी था पास में बैठा,
ज़ोर-ज़ोर से बाघ दहाड़ा
नाच रहा था भालू प्यारा।
मस्ती में थे घोड़ा हाथी,
घूम रहे थे बन कर साथी
हिरण मज़े से दौड़ रहे थे,
सबको पीछे छोड़ रहे थे।
तरह-तरह के पक्षी देखे
सुंदर-सुंदर मोर भी देखे,
गैंडे और घड़ियाल को देखा
रीछ की बहकी चाल को देखा।
जानवरों की ये दुनिया न्यारी
हमको लगती बहुत ही प्यारी,
इनकी रक्षा फर्ज़ हमारा
हमको इनका बहुत सहारा।

गिलहरी

पेड़ों के ऊपर ये घूमे,
डाल डाल पर उछले कूदे।

सुंदर-सुंदर न्यारी न्यारी,
मुझको लगती बहुत ही प्यारी।

छुप छुप के मैं इसको देखूं,
कभी-कभी मैं पीछे भागूं।

पर ये किसी के हाथ न आए,
आहट सुनते फुर्र हो जाए।

दबे पांव भले ही आए,
ये तो सरपट भाग ही जाए।

वो देखो उस पेड़ के नीचे,
छुप गई लो पत्तों के पीछे।

थोड़ी काली थोड़ी भूरी,
जैसे हो रेशम की डोरी।

दो हाथों को ये है घुमाए,
बैठ के मज़े से देखो खाए।

रोड सेफ्टी

बिना जरूरत देखो पापा,
हार्न नहीं बजाना है।
इससे बढ़ता है पल्यूशन,
सबको ये समझाना है।

सुन लो भैया, सुन लो दीदी,
हैलमेट बहुत जरूरी है।
अंकल आंटी बेल्ट बांध लो,
सेफ्टी की मजबूरी है।

नियमों का हमें पालन करना,
ध्यान से करना ओवरटेक।
स्पीड लिमट को देख के चलना,
करना नहीं कोई मिस्टेक।

बंद करो मोबाईल को,
ये तो है खतरे की घंटी।
ध्यान नहीं भटकाना तुमको,
मम्मी पापा के प्यारे बंटी।

लाल, हरी और पीली बत्ती,
सबको ये समझाती है।
रुकना, बढ़ना, ध्यान से चलना,
घर की राह दिखाती है।

कुल्फी वाला

गर्मी का जब मौसम आए
सन्नी को फिर कुल्फी भाए,
तीले से पकड़ कर खाती
चाट-चाट कर मज़े उड़ाती।

कुल्फी वाला भैया आकर
घंटी खूब बजाए,
सन्नी बन्नी सीमा रोमा
जम कर शोर मचाए।

सन्नी बोली मुझको देना
कुल्फी रंग रंगीली,
बन्नी को भाती है कुल्फी
आम के रस की पीली।

जब भी देखो मुन्नी खाती
कुल्फी चाकलेट वाली,
नन्ही को तो सदा ही भाती
काजू पिस्ते की हरियाली।

ठंडी मीठी सभी कुल्फियां
सब का स्वाद निराला,
देख के परियों की टोली
खुश होता कुल्फी वाला।

सर्कस

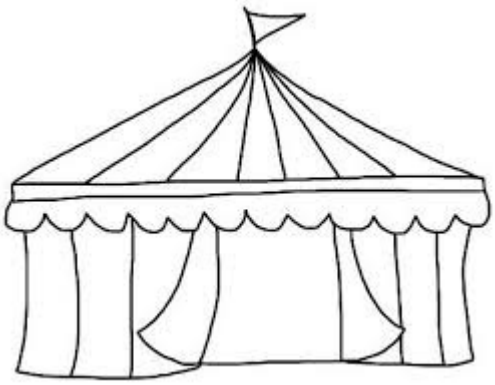

जंबो सर्कस लगी हुई है
हमको देखने जाना है,
टीचर को कह करके हमने
सबका टिकट मंगाना है।

रस्सी पर वहां चलती लड़की
हाथ में लेकर छतरी,
हाथी मियां करे सलामी
जैसे हो कोई बकरी।

अजब गजब से करतब होते
सांस अटक सी जाए,
मोटा काला भालू दादा
छोटी सी साईकिल चलाए।

शक्ल देखकर जोकर की
मच जाती हलचल,
उलटी सीधी हरकतें ऐसी
पेट में पड़ जाएं बल।

सब्जियों की बैठक

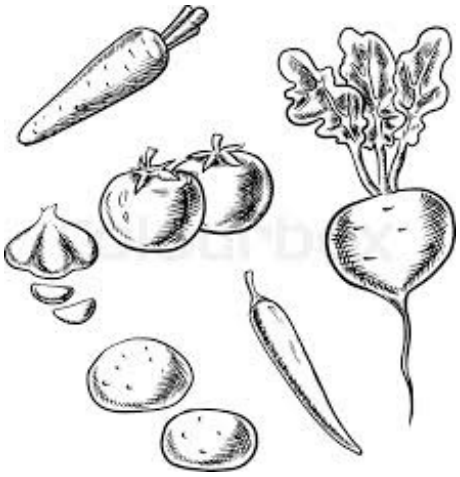

भिंडी, तोरी, कद्दू, करेला
सब मिल बैठे लगा के मेला।
गोभी, आलू, बैंगन आए,
मटर मिर्ची को साथ में लाए।

टिंडा मियां रहे न पीछे,
शलगम आ गया आंखें मीचे।
धनिया, मेथी, पालक भागे,
गाजर, मूली नींद से जागे।

टमाटर, अरबी आगे आए,
बोले अपना राजा किसे बनाएं।
कद्दू लुढ़क के आगे आया,
बड़ा होने का रौब जमाया।

जम कर फिर वहां हुई लड़ाई,
पर कोई बात न बनने पाई।
बैंगन को सूझी इक बात,
फैसला होगा वोट के साथ।

वोट आलू के हक में आए,
भिंडी को ये बात न भाए।
प्यार से आलू ने हाथ बढ़ाया,
भिंडी ने फिर ताव दिखाया।

आलू ने फिर की अठखेली,
जा मर, तू रहना अकेली।
सब सब्जियों में मैं मिल जाऊंगा,
खूब स्वाद बढ़ाऊंगा।

भिंडी को रहता है घमंड,
कोई न बोले उसके संग।
वो तो रहती सदा अकेली,
कोई न उसकी सखी सहेली।

रेलगाड़ी

रेलगाड़ी का सफर निराला,
बच्चों को लगता है आला।

छुक छुक छुक छुक आगे दौड़े,
पेड़ पौधों को पीछे छोड़े।

पुल के ऊपर, गुफा के अंदर,
भागी जाए मस्त कलंदर।

लेट के जाएं, बैठ के जाएं,
पैर कभी ना थकने पाए।

दिन रात ये चलती जाए,
बिछुड़ों को फिर ये मिलाए।

दिल्ली, कानपुर या इंदौर,
भाग के पहुंचे ये सिरमौर।

सीटी जब ये बजाती है,
मीठी तान सुनाती है।

झंडी, सिगनल देख ये चलती,
चेन खींचते ही रुक जाती।

सारे देश के शहर घुमाती,
सबके मन को खूब ये भाती।

पेड़ लगाएं

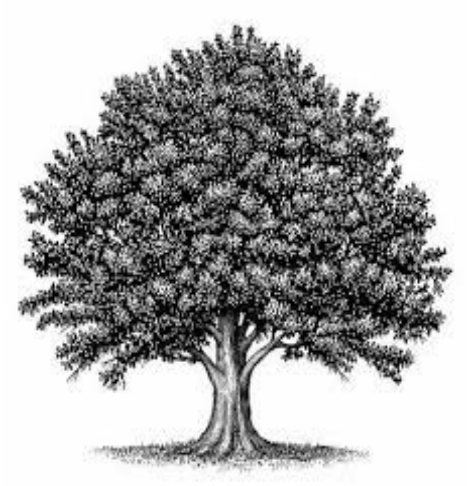

मेरे घर में चार हैं पेड़,
नीम, पपीता, जामुन, बेर।

मीठे मीठे फल हम खाते,
पक्षी मधुर गीत सुनाते।

कोयल, तोता, मैना आते,
घोंसला फिर वो यहां बनाते।

सावन का जब मौसम आए,
काले काले बादल छाए,

बारिश में सब पेड़ नहाए,
नए नए फिर पत्ते आए।

मिलजुल कर हम नाचे कूदे,
पेड़ों की छाया में बैठे।

हमसे तो ये कुछ न मांगे,
शुद्ध हवा ये हरदम बांटे।

जितने पेड़े लगाएंगे,
उतनी खुशियां पाएंगे।

मेरा भारत

भारत कहो या हिंदुस्तान,
मेरे देश की अजब है शान।

ऊंचे-ऊंचे पर्वत देखो,
गहरे-गहरे सागर।

कल कल करती नदियां बहती,
मीठी धुन में ये कुछ कहती।

हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
सब मिल रहते भाई-भाई।

तरह-तरह की बोली बोले,
दुःख सुख में ये मिलकर डोले।

ऋषि मुनियों का देश है मेरा,
हिमालय का सिर पर पहरा।

देश के फौजी हिम्मत वाले,
भारत माँ के ये रखवाले।

सबसे ऊंचा रहे तिरंगा,
खुशहाली की बहती गंगा।

टाइटल बैक

भले ही जमाना तेज़ी से डिजिटल युग की ओर अग्रसर हो रहा है, मगर किताबों का अपना ही महत्व है। किताबों के महत्व का उतना वर्णन नहीं किया जा सकता, जितना कि महसूस किया जा सकता है। आधुनिक गैजेट्स के साथ-साथ बच्चों में किताब पढ़ने की आदत भी विकसित होनी जरूरी है और उसके लिए ज़रूरत है बाल साहित्य की। बच्चों की कितनी भी महंगी आईसक्रीम दिला दो, लेकिन कुल्फी वाले की घंटी आज भी उनका मन मोह लेती है।

''सन्नी बोली मुझको देना कुल्फी रंग-रंगीली,
बन्नी को भाती है कुल्फी, आम के रस की पीली''

विमला गुगलानी की यह बाल पुस्तक सिर्फ मनोरंजन ही नहीं संदेश भी देती है। 'रोड सेफ्टी' कविता में कवियत्रि की यह लाइनें :

''बंद करो मोबाईल को, ये तो है खतरे की घंटी।
ध्यान नहीं भटकाना तुमको, मम्मी पापा के प्यारे बंटी।''

बीस कविताओं का यह बाल काव्य अत्यंत सुंदर विभिन्न विषयों का रंगीन गुलदस्ता है, जो बच्चों का मन मोह लेगा। उम्मीद है कवियित्री का बाल लेखनी का यह सफर आगे भी जारी रहेगा।

बहुत सी शुभ कामनाएं।

- प्रेम विज
कवि, कहानीकार, व्यंग्यकार